अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका
ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 02, (April-June 2025)

टोहाना ब्लॉक के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि का तुलनात्मक अध्ययन

Dr. Rajesh Kumar, Assistant Registrar
Shri Vishwakarma Skill University, Palwal Haryana

भूमिका -
शिक्षा तथा मानव जाति का जन्म-जन्मांतर का संबंध है। शिक्षा आंतरिक वृद्धि तथा विकास की न समाप्त होने वाली प्रक्रिया है और इसकी अवधि जन्म से मृत्यु तक फैली हुई है। शिक्षा का वास्तविक अर्थ मनुष्य को मानव बनाना तथा जीवन को प्रगतिशील, सांस्कृतिक एवं सभ्य बनाना है। यह व्यक्ति तथा समाज की वृद्धि के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

शिक्षा के माध्यम से मनुष्य अपनी विचार शक्ति, तर्क शक्ति, समस्या-समाधान क्षमता, बौद्धिकता, प्रतिभा तथा रुचि, सकारात्मक भावनाएं तथा कुशलता और अच्छे मूल्यों का विकास करता है। इसी के द्वारा वह मानवीय, सामाजिक, नैतिक और आंतरिक प्राणी में परिवर्तित हो जाता है। मनुष्य प्रतिदिन तथा हर क्षण कुछ न कुछ सीखता है; उसका समस्त जीवन ही शिक्षा है। अतः शिक्षा एक निरंतर तथा गतिशील प्रक्रिया है। इसका संबंध सदा विकसित होने वाले मानव तथा समाज के साथ है।

शिक्षा के स्तर -शिक्षा के मुख्यतः निम्नलिखित स्तर होते हैं -

1. प्राथमिक स्तर
2. माध्यमिक स्तर
3. उच्च स्तर

माध्यमिक स्तर -शिक्षा के माध्यमिक स्तर में 9वीं से 12वीं तक की कक्षाएं आती हैं। माध्यमिक शिक्षा का अर्थ वह शिक्षा है जो द्वितीय अवस्था में दी जाती है।

माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952-53) के अनुसार — "वह शिक्षा जो प्राथमिक शिक्षा पूरी होने के बाद और विश्वविद्यालय शिक्षा प्रारंभ होने से पहले समाप्त हो जाती है, माध्यमिक शिक्षा कहलाती है।"

माध्यमिक शिक्षा, प्राथमिक एवं उच्च शिक्षा के मध्य संबंध जोड़ने वाली कड़ी का कार्य करती है। अतः पूरे शिक्षा क्रम में इसका विशेष महत्व है। वर्तमान में प्रयास किया जा रहा है कि माध्यमिक शिक्षा स्वयं में एक स्वतंत्र इकाई बने तथा विद्यार्थियों को व्यावहारिक प्रशिक्षण देकर जीवन के लिए तैयार कर सके।

व्यवसाय -
व्यावसायिक जीवन का प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में अत्यधिक महत्व होता है। बिना रोजगार प्राप्त किए व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर सकता। आवश्यकताओं की पूर्ति के अभाव में जीवन कठिन हो जाता है।

वास्तव में, जीवन का निर्माण व्यवसाय से प्राप्त आय पर निर्भर करता है। व्यक्ति के रहन-सहन, कार्य की गति तथा सामाजिक स्थिति पर उसकी आय का प्रभाव पड़ता है। संक्षेप में, जीवन और व्यवसाय का गहरा संबंध होता है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 02, (April-June 2025)

व्यावसायिक शिक्षा –

व्यावसायिक शिक्षा शिक्षा की एक महत्वपूर्ण धारा है, जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों को विभिन्न व्यवसायों के लिए तैयार करना है। इन विषयों का चयन सामान्यतः माध्यमिक स्तर के बाद किया जाता है, हालांकि लचीलापन रखते हुए कुछ विषय आठवीं कक्षा के बाद भी उपलब्ध कराए जाते हैं।

व्यावसायिक शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों में कौशल, स्वरोजगार की क्षमता तथा कार्यकुशलता का विकास करना है। इसमें कृषि, मार्केटिंग, समाज सेवा आदि क्षेत्रों से संबंधित विषयों को भी शामिल किया जाता है।

रुचि का अर्थ –

रुचि अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। विभिन्न व्यक्ति एक ही दृश्य में भिन्न-भिन्न वस्तुओं को देखते हैं। उदाहरण के लिए, एक भूगर्भशास्त्री, एक वनस्पति शास्त्री और एक कवि एक ही स्थान पर अलग-अलग दृष्टिकोण से चीजों को देखते हैं। इसका कारण उनकी रुचि है।

व्यावसायिक रुचि –

व्यावसायिक रुचि का संबंध व्यक्ति की पसंद और झुकाव से होता है। व्यक्ति जिस कार्य में रुचि रखता है, उसी में सफलता प्राप्त कर सकता है। बिना रुचि के किया गया कार्य प्रभावी नहीं होता।

समस्या की आवश्यकता-

माध्यमिक स्तर पर शिक्षा प्राप्त करने के बाद कई विद्यार्थी विभिन्न कारणों से पढ़ाई छोड़ देते हैं, जिससे उन्हें रोजगार प्राप्त करने में कठिनाई होती है। इसका एक कारण यह भी है कि उन्हें व्यवसायों के बारे में पर्याप्त जानकारी नहीं होती।

अतः माध्यमिक स्तर पर ही विद्यार्थियों को व्यावसायिक शिक्षा प्रदान करना आवश्यक है, ताकि उनकी रुचि और योग्यता के अनुसार उन्हें उचित मार्गदर्शन मिल सके।

समस्या कथन –

"टोहाना ब्लॉक के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि का तुलनात्मक अध्ययन।"

समस्या में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण -

1. **शहरी क्षेत्र** - जिन लोगों का निवास, रहन-सहन एवं व्यवसाय शहर में होता है, वे शहरी क्षेत्र के अंतर्गत आते हैं।
2. **ग्रामीण क्षेत्र** - जिन लोगों का निवास, रहन-सहन एवं व्यवसाय गांव में होता है, वे ग्रामीण क्षेत्र के अंतर्गत आते हैं।
3. **माध्यमिक स्तर** - वह स्तर जो प्राथमिक शिक्षा के बाद और उच्च शिक्षा से पहले आता है, माध्यमिक स्तर कहलाता है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 02, (April-June 2025)

4. **व्यावसायिक** - जीवनयापन के लिए आवश्यक कार्य या रोजगार को व्यवसाय कहते हैं, और उससे संबंधित शिक्षा को व्यावसायिक कहा जाता है।
5. **रूचि** – "रूचि" अंग्रेजी भाषा के शब्द *Interest* का हिन्दी रूपान्तरण है। यह शब्द लैटिन भाषा के *Interesse* से व्युत्पन्न है, जिसका अर्थ है – "महत्व रखना" या "रुचि होना"। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि जिस वस्तु या कार्य से हमें लगाव हो, जो हमारे लिए उपयोगी या महत्वपूर्ण हो, वह हमारे लिए रुचिकर होता है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. टोहाना ब्लॉक के शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के छात्रों की व्यावसायिक रुचि का अध्ययन करना।
2. टोहाना ब्लॉक के शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर की छात्राओं की व्यावसायिक रुचि का अध्ययन करना।
3. टोहाना ब्लॉक के ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के छात्रों की व्यावसायिक रुचि का अध्ययन करना।
4. टोहाना ब्लॉक के ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर की छात्राओं की व्यावसायिक रुचि का अध्ययन करना।
5. टोहाना ब्लॉक के शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के छात्रों एवं छात्राओं की व्यावसायिक रुचि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
6. टोहाना ब्लॉक के ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के छात्रों एवं छात्राओं की व्यावसायिक रुचि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
7. टोहाना ब्लॉक के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के छात्रों की व्यावसायिक रुचि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
8. टोहाना ब्लॉक के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर की छात्राओं की व्यावसायिक रुचि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
9. टोहाना ब्लॉक के शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के छात्रों एवं ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं की व्यावसायिक रुचि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
10. टोहाना ब्लॉक के शहरी क्षेत्र की छात्राओं एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों की व्यावसायिक रुचि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ

1. टोहाना ब्लॉक के शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के छात्रों एवं छात्राओं की व्यावसायिक रुचि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. टोहाना ब्लॉक के ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के छात्रों एवं छात्राओं की व्यावसायिक रुचि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
3. टोहाना ब्लॉक के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के छात्रों की व्यावसायिक रुचि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
4. टोहाना ब्लॉक के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं की व्यावसायिक रुचि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
5. टोहाना ब्लॉक के शहरी क्षेत्र के छात्रों एवं ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं की व्यावसायिक रुचि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
6. टोहाना ब्लॉक के शहरी क्षेत्र की छात्राओं एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों की व्यावसायिक रुचि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 02, (April-June 2025)

अध्ययन की परिसीमाएँ

1. यह अध्ययन फतेहाबाद जिले के टोहाना ब्लॉक के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों तक सीमित रखा गया।
2. यह अध्ययन केवल माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों तक सीमित रहा।
3. यह अध्ययन केवल विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि तक सीमित रहा।

अध्ययन में प्रयुक्त अनुसंधान विधि

उच्च एवं निम्न परिवार के विद्यार्थियों के नैतिक स्तर, मूल्य विकास, शैक्षिक उपलब्धि एवं अभिप्रेरणा का अध्ययन करने के लिए शोधकर्ता ने वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया। इस विधि में न तो स्वतंत्र चर एवं परतंत्र चर का नियंत्रण किया जाता है और न ही उनमें परिवर्तन किया जाता है, बल्कि यथास्थिति में उनके प्रभाव का अध्ययन किया जाता है। शैक्षिक शोध में सर्वेक्षण विधि का व्यापक उपयोग होता है। इसे मानवीय सर्वेक्षण भी कहा जाता है, जिसका मुख्य उद्देश्य यथार्थ के विभिन्न पक्षों का वर्णन करना है।

अध्ययन में प्रयुक्त जनसंख्या

प्रस्तुत शोध में टोहाना ब्लॉक के दस माध्यमिक विद्यालयों के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों को जनसंख्या के रूप में लिया गया। इस अध्ययन में कुल 200 विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया, जिनमें 100 विद्यार्थी शहरी क्षेत्र के तथा 100 विद्यार्थी ग्रामीण क्षेत्र के हैं।

अध्ययन में प्रयुक्त नमूना (न्यादर्श)

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्ता ने दस माध्यमिक विद्यालयों में से 100 शहरी एवं 100 ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों को नमूने (न्यादर्श) के रूप में चयनित किया।

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण

इस शोधकार्य में आंकड़ों के संकलन हेतु शोधकर्ता द्वारा स्वनिर्मित प्रश्नावली का उपयोग किया गया।

अध्ययन में प्रयुक्त अभिकल्प

प्रस्तुत अध्ययन में स्थायी द्वि-समूह तुलनात्मक अभिकल्प का प्रयोग किया गया। इस प्रकार के अभिकल्प में दो स्थायी समूहों का चयन किया जाता है। इन समूहों को समान बनाने का प्रयास नहीं किया जाता। पहले दोनों समूहों का पूर्व परीक्षण किया जाता है, फिर प्रायोगिक उपचार दिया जाता है और उसके पश्चात पुनः परीक्षण किया जाता है। दोनों स्थितियों में प्राप्त मध्यमानों के अंतर की सार्थकता की जाँच 'टी-परीक्षण' द्वारा की जाती है।

अध्ययन में प्रयुक्त प्रश्नावली

शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि को मापने के लिए स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 02, (April-June 2025)

अध्ययन में प्रयुक्त आंकड़े

प्रस्तुत अध्ययन में आंकड़ों के संकलन हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। प्राप्त आंकड़े समान-अंतर (Interval Data) के प्रकार के हैं।

समान-अंतर आंकड़े

इस प्रकार के आंकड़े अधिक शुद्ध माने जाते हैं। इनमें विभिन्न समूहों या वर्गों के बीच समान अंतर होता है, परंतु इनका शून्य बिंदु निरपेक्ष (absolute) नहीं होता।

अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकीय पद्धतियाँ

आंकड़ों के विश्लेषण हेतु निम्न सांख्यिकीय पद्धतियों का प्रयोग किया गया—

(क) माध्य (Mean)-विद्यार्थियों के नैतिक स्तर, मूल्य विकास, शैक्षिक उपलब्धि एवं अभिप्रेरणा को जानने के लिए प्राप्तांकों का माध्य ज्ञात किया गया। माध्य प्राप्त करने के लिए सभी मूल्यों के योग को कुल संख्या से भाग दिया जाता है।

(ख) मानक विचलन (Standard Deviation):-विद्यार्थियों के प्राप्तांकों का उनके औसत मान से विचलन ज्ञात करने के लिए मानक विचलन निकाला जाता है। मानक विचलन को औसत विचलन का वर्गमूल भी कहा जाता है। यह वितरण के औसत से सभी विचलनों के वर्गों के औसत का वर्गमूल होता है।

प्रतिदर्श का मानक विचलन—

σ = प्रतिदर्श का मानक विचलन

x = प्राप्त आँकड़ों का मध्य बिंदु से विचलन

n = मापों की संख्या

$\sqrt{}$ = प्राप्त संख्या का धनात्मक वर्गमूल

(ग) टी-टेस्ट (t-test):-दो समूहों की तुलना करने के लिए टी-टेस्ट का प्रयोग किया गया है।

M_1 = पहले समूह का मध्यमान

M_2 = दूसरे समूह का मध्यमान

σ_1 = पहले समूह का मानक विचलन

σ_2 = दूसरे समूह का मानक विचलन

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 02, (April-June 2025)

n_1 = पहले समूह के आँकड़ों की संख्या

n_2 = दूसरे समूह के आँकड़ों की संख्या

परिणाम:

1. शहरी क्षेत्र के छात्रों की व्यवसायिक रुचि के अध्ययन में पाया गया कि 50 छात्रों का चयन किया गया। उनका मध्यमान 31.16 तथा मानक विचलन 4.899 है। उनका प्रतिशतांक 68% पाया गया।
2. शहरी क्षेत्र की छात्राओं की व्यवसायिक रुचि के अध्ययन में पाया गया कि 50 छात्राओं का चयन किया गया। उनका मध्यमान 29.72 तथा मानक विचलन 2.87 है। उनका प्रतिशतांक 65% प्राप्त हुआ।
3. ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों की व्यवसायिक रुचि के अध्ययन में पाया गया कि 50 छात्रों का चयन किया गया। उनका मध्यमान 27.52 तथा मानक विचलन 8.07 है। उनका प्रतिशतांक 60% प्राप्त हुआ।
4. ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं की व्यवसायिक रुचि के अध्ययन में पाया गया कि 50 छात्राओं का चयन किया गया। उनका मध्यमान 20.8 तथा मानक विचलन 11.83 है। उनका प्रतिशतांक 46% प्राप्त हुआ।
5. शहरी क्षेत्र के छात्रों एवं छात्राओं की व्यवसायिक रुचि में पाया गया कि 't' का प्राप्त मान तालिका मान से कम है, अतः दोनों समूहों में कोई सार्थक अंतर नहीं है। शून्य परिकल्पना स्वीकार की जाती है।
6. ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की व्यवसायिक रुचि के तुलनात्मक अध्ययन में पाया गया कि 't' का प्राप्त मान तालिका मान से अधिक है, अतः दोनों समूहों में सार्थक अंतर है। शून्य परिकल्पना अस्वीकार की जाती है।
7. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों की व्यवसायिक रुचि के तुलनात्मक अध्ययन में पाया गया कि 't' का प्राप्त मान तालिका मान से कम है, अतः सार्थक अंतर नहीं है। शून्य परिकल्पना स्वीकार की जाती है।
8. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं की व्यवसायिक रुचि के तुलनात्मक अध्ययन में पाया गया कि 't' का प्राप्त मान तालिका मान से अधिक है, अतः सार्थक अंतर है। शून्य परिकल्पना अस्वीकार की जाती है।
9. शहरी क्षेत्र के छात्रों एवं ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं की व्यवसायिक रुचि के तुलनात्मक अध्ययन में पाया गया कि 't' का प्राप्त मान तालिका मान से कम है, अतः सार्थक अंतर नहीं है। शून्य परिकल्पना स्वीकार की जाती है।
10. शहरी क्षेत्र की छात्राओं एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों की व्यवसायिक रुचि के तुलनात्मक अध्ययन में पाया गया कि 't' का प्राप्त मान तालिका मान से कम है, अतः सार्थक अंतर नहीं है। शून्य परिकल्पना स्वीकार की जाती है।

निष्कर्ष:

1. अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला गया कि शहरी तथा ग्रामीण दोनों क्षेत्रों के छात्रों एवं छात्राओं की व्यवसायिक रुचि सामान्यतः उच्च स्तर की पाई गई।
2. शहरी क्षेत्र के छात्रों एवं छात्राओं के बीच कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया, जबकि ग्रामीण क्षेत्र में छात्रों एवं छात्राओं के बीच सार्थक अंतर पाया गया।
3. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों के बीच कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया, जबकि छात्राओं के बीच सार्थक अंतर पाया गया।
4. अन्य तुलनात्मक विश्लेषणों में भी अधिकांश स्थितियों में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका
RESEARCHERID THOMSON REUTERS
ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 02, (April-June 2025)

समस्या का शैक्षिक महत्व:

किसी भी व्यवसाय में सफलता प्राप्त करने के लिए उस कार्य के प्रति रुचि का होना अत्यंत आवश्यक है। जब तक विद्यार्थी किसी कार्य में रुचि नहीं लेते, तब तक वे उससे संतुष्टि प्राप्त नहीं कर पाते और न ही उसमें दक्षता विकसित कर पाते हैं।

यह माना जाता है कि बिना रुचि के कोई भी कार्य प्रभावी रूप से नहीं किया जा सकता, जबकि रुचि होने पर व्यक्ति उस कार्य को महत्व देता है और उसकी क्षमता का विकास होता है।

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता ने माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यवसायिक रुचियों का विश्लेषण किया है, ताकि उनकी रुचि के अनुसार उन्हें व्यावसायिक शिक्षा प्रदान की जा सके। इससे वे भविष्य में अपनी आजीविका अर्जित करने में सक्षम हो सकेंगे तथा उनकी कार्य-कुशलता एवं रुचि दोनों का विकास होगा।

भावी शोध के लिए सुझाव:-

प्रस्तुत अध्ययन में यद्यपि पूर्ण रूप से ध्यान दिया गया है तथा अध्ययन हेतु आवश्यक सभी सावधानियाँ बरती गई हैं, तथापि समय की कमी के कारण इसमें कुछ त्रुटियाँ रह गई हैं। विशेष रूप से, न्यादर्श पूर्ण जनसंख्या का प्रतिनिधित्व नहीं कर सका। इस अध्ययन को अधिक वैज्ञानिक रूप प्रदान करने के लिए बड़े न्यादर्श का प्रयोग किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, कुछ अन्य कारकों को भी इस अध्ययन के साथ जोड़ा जा सकता है। इन सभी तथ्यों को ध्यान में रखते हुए शोधार्थी निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत करता है—

1. हरियाणा राज्य के शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि का अध्ययन किया जा सकता है।
2. हरियाणा राज्य के ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि का अध्ययन किया जा सकता है।
3. अनाथ बालकों की व्यावसायिक रुचि का अध्ययन किया जा सकता है।
4. विशिष्ट बालकों की व्यावसायिक रुचि का अध्ययन किया जा सकता है।
5. छात्र एवं छात्राओं की व्यावसायिक रुचि का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
6. नवोदय विद्यालयों के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि का अध्ययन किया जा सकता है।
7. यह अध्ययन ग्रामीण एवं शहरी स्तर तथा सामाजिक स्थितियों के संदर्भ में विभिन्न रुचियों को जानने के लिए किया जा सकता है।
8. विभिन्न जातियों के बालकों की व्यावसायिक रुचियों का अध्ययन किया जा सकता है।
9. यह अध्ययन विद्यालय में अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक रुचियों के क्षेत्रों—जैसे कृषि, वाणिज्य, फाइन आर्ट, गृह विज्ञान, कला, विज्ञान तथा तकनीकी शिक्षा—में किया जा सकता है।
10. यह अध्ययन एम.एड. स्तर पर किया गया है, जबकि इसका विस्तृत रूप से प्रयोग एम.फिल. या पीएच.डी. स्तर पर भी किया जा सकता है।